लखपति गायें	7	मतांतरित होने के बजाय मैला ढोना स्वीकार किया	12	मदरसों में राष्ट्रगान अनिवार्य	13

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

पाथेय कण

₹10

www.patheykan.com

वैशाख शु.1, वि.2079, युगाब्द 5124, 1 मई, 2022

भारत में हिंदू हो रहे हैं अल्पसंख्यक

कई राज्यों में मुसलमान व ईसाई बहुसंख्यक होते हुए भी अल्पसंख्यकों के अधिकार व सुविधाएं ले रहे हैं

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठें

राजस्थान सरकार के दो फरमान जारी हुए पहला फरमान रमजान माह को देखते हुए किया गया जिसमें सरकार द्वारा आदेश दिया गया कि मुस्लिम बहुल इलाकों में रमजान के महीने में किसी भी प्रकार की बिजली कटौती नहीं की जाएगी। दूसरा आदेश आया जिसमें सरकार ने रामनवमी, हनुमान जयंती, गणगौर और महावीर जयंती आदि को देखते हुए राजस्थान के बहुत से क्षेत्रों में धारा 144 लगा दी।

इन दो फरमानों से जनता में सरकार के प्रति रोष की भावना का संचार हुआ। हालांकि इस पर सरकार द्वारा सफाई दी गई कि राज्य में कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए ऐसा किया गया है। रमजान को देखते हुए जो निर्बाध रूप से बिजली देने का आदेश और हिंदू त्यौहारों को देखते हुए इकट्ठा होने पर प्रतिबंध लगाना ऐसा लगता है कि सरकार का झुकाव एक समुदाय विशेष की तरफ ज्यादा है।

राजस्थान में तुष्टीकरण की राजनीति को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिससे जनता में एक अविश्वास की भावना का प्रवाह हो रहा है।

सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने नागरिकों के प्रति समान भाव रखे, किसी भी नागरिक से भेदभाव की भावना नहीं रखे।

सरकार को वोट बैंक और तुष्टीकरण की राजनीति से ऊपर उठकर प्रदेश की जनता के हित में निर्णय लेना चाहिए।

–देवेन्द्र पुरोहित
devendrapurohit400@gmail.com

धरती का बुखार किस वैक्सीन से उतरेगा?

समूची पृथ्वी मानवजनित कारणों से गर्मा रही है जिसे 'ग्लोबल वार्मिंग' कहा जाता है। धरती का अनवरत खनन, कृषि भूमि की जबरदस्त खरीद–फरोख्त, वन भूमि पर अतिक्रमणों, पेड़ों का सफाया और अनियंत्रित कंकरीट के जंगलों एवं रासायनिक खेती, बढ़ते डंपिंग यार्ड व प्रदूषित नदियों को नहीं बचाने की सोच, किस प्रकार धरती पर प्राकृतिक संसाधनों की लूट मची है? कोरोना, ओमिक्रोन के वैक्सीन तो बन गए लेकिन धरती का बुखार उतारने की वैक्सीन तो आम जनता को ही बनानी होगा। सरकारों का इंतजार किए बिना ये काम हमें करना होगा। धरती के बुखार को उतारने का एक ही कारगर वैक्सीन है– वन बढ़ाओ व जन को नियंत्रित करो। ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण, जंगल का संवर्द्धन और संरक्षण, नदियों की स्वच्छता व कचरे को कंचन में बदलने में ही वैक्सीन के तत्व छिपे हैं।

–बृजेश विजयवर्गीय, कोटा

द कश्मीर फाइल्स

1 अप्रैल, 2022 के पाथेय कण में लिखा गया संपादकीय 'कश्मीर में हिन्दू–नरसंहार और भारतीय फिल्म जगत' बहुत ही मार्मिक लगा। 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म ने कश्मीरी पंडितों के नरसंहार से न केवल हम सबको परिचित कराया वरन् विश्व–पटल पर कश्मीर की सच्चाई प्रस्तुत की। इस पुनीत कार्य के लिए फिल्म निर्देशक विवेक जी अग्निहोत्री का बहुत–बहुत साधुवाद।

– कन्हैयालाल मीणा ,
ग्राम अयाना,पीपल्दा, कोटा

बाल विवाह भारतीय समाज में एक चुनौती

अक्षय तृतीया, जानकी नवमी, पीपल पूनम पर बाल विवाह का काफी चलन है। इस प्रथा से समाज में अनेक समस्याओं का जन्म होता है। बचपन में ही विवाह हो जाने से बालक–बालिका शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते, वे अज्ञानवश रूढ़ियों से जकड़ जाते हैं, अबोध अवस्था में विवाहित वर–वधू को भविष्य में आपसी कलह का शिकार होना पड़ता है, कभी–कभी तो तलाक तक की नौबत भी आ जाती है। आज के दौर में समाज को बाल विवाह रोकने के लिए कठोर उपाय अपनाने चाहिए और इस कुप्रथा के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए तभी समाज को इस अभिशाप से मुक्त कराया जा सकेगा।

–संदीप छीपा,
sandeepchhipa161@gmail.com

आप भी लिखिए अपनी फोटो के साथ

पाथेय कण में प्रकाशित किसी समाचार/लेख या अन्य सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया/टिप्पणी या कोई सुझाव अथवा प्रकाशित सामग्री के विषय पर अपने विचार हमें अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो के साथ व्हाट्सएप या मेल करें अथवा डाक से भेजें।

79765 82011
patheykan@gmail.com

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें (दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- लाल किले से प्रधानमंत्री का गुरु तेगबहादुर के प्रकाश पर्व पर उद्बोधन
  https://patheykan.com/?p=15339
- भारतीय परंपराओं को अपनाने हेतु आतुर है विश्व
  https://patheykan.com/?p=15313

- अलवर में 300 साल पुराने मंदिर पर चला बुलडोजर
  https://patheykan.com/?p=15342

पाक्षिक
पाथेय कण

वैशाख शुक्ल
1 से 14 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

1-15 मई, 2022
वर्ष 38 : अंक 03

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने की शिकायत हेतु सम्पर्क नं.
जयपुर प्रांत 9004951020
चित्तौड़ प्रांत 8619273491
जोधपुर प्रांत 9929722111
प्रेषण प्रभारी 9413645211

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

इतिहास के सच को स्वीकारना आवश्यक

शायद बहुत कम लोग जानते होंगे कि 15 अगस्त,1947 को मिली स्वाधीनता से पूर्व भी दो बार देश में चुनाव हुए थे, 1937 और 1945-46 में। इन चुनावों में मुसलमानों के लिए सीटें आरक्षित की गई थीं। इन सीटों पर केवल मुसलमान ही मतदान कर सकते थे।

1945 के दिसंबर माह में केन्द्रीय विधान-परिषद के लिए चुनाव हुए। 1946 की जनवरी में अंग्रेजी शासन के अंतर्गत आने वाले सभी 11 प्रांतों में प्रांतीय असेम्बली के लिए चुनाव हुए।

मुस्लिम लीग द्वारा 1940 से ही जिन्ना के नेतृत्व में मुसलमानों के लिए अलग देश के निर्माण की मांग जोर-शोर से की जा रही थी। अतः मुस्लिम लीग ने अपना चुनाव इसी मुद्दे पर लड़ा। चुनाव के दौरान मुस्लिम लीग की ओर से मज़हबी नारे लगाए जाते थे और पाकिस्तान निर्माण की बातें की जाती थीं। इन मुस्लिम सीटों पर कांग्रेस ने भी अपने मुस्लिम उम्मीदवार उतारे। कांग्रेस ने अखंड भारत के नाम पर वोट मांगे थे। इसलिए कह सकते हैं कि इन चुनावों में मुस्लिम मतदाता के सामने दो ही विकल्प रह गए थे, मुसलमानों हेतु एक अलग देश बनाने के लिए मुस्लिम लीग को वोट देना या फिर 'भारत अखंड रहे' इसके लिए कांग्रेस को वोट देना।

यह जानना दिलचस्प होगा कि इन मुस्लिम सीटों पर चुनाव परिणाम क्या रहा? भारत के विभिन्न भागों में रह रहे मुस्लिम मतदाताओं ने अपना 'मत'(वोट) किसके पक्ष में दिया? कांग्रेस के 'अखंड भारत' के पक्ष में या मुस्लिम लीग के 'मुसलमानों के लिए एक अलग देश बनाने' के मुद्दे के समर्थन में?

यह जानकर शायद आश्चर्य हो कि केन्द्रीय असेम्बली के लिए आरक्षित सभी मुस्लिम सीटों पर मुस्लिम लीग ने जीत दर्ज की। अपने को मुसलमानों का रहनुमा बताने वाली कांग्रेस एक भी मुस्लिम सीट जीत नहीं पाई। यू.पी., बिहार, असम के ही नहीं, बम्बई और मद्रास तक में रहने वाले मुसलमानों ने मुस्लिम लीग को जिताया। और, प्रांतीय असेम्बली में क्या रहा? अधिकतर सीटों पर मुस्लिम लीग जीती। बिहार, बम्बई (मुम्बई), मद्रास (आज का तमिलनाडु) और उड़ीसा की तो सभी मुस्लिम सीटों पर मुस्लिम लीग विजयी रही। यानि सभी प्रांतों के मुस्लिम मतदाताओं ने पाकिस्तान बनाने के लिए मतदान किया।

देश में अवश्य ही कुछ मुसलमान बंधु ऐसे भी थे जो पाकिस्तान बनाए जाने के पक्ष में नहीं थे, जो जिन्ना और मुस्लिम लीग के इस कथन से सहमत नहीं थे कि 'धर्म, रीति-रिवाज और परंपरा से मुसलमान अलग हैं, इसलिए उनका हिंदुओं से अलग देश होना चाहिए।' उन्होंने मुस्लिम लीग को वोट नहीं दिया। परन्तु देश के अधिकांश मुस्लिम मतदाताओं ने 'अखंड भारत' के कांग्रेसी मुद्दे को नकार दिया था। साफ था कि वे अपने लिए एक अलग देश बनाना चाहते थे और हुआ भी यही। मुसलमानों को उनकी इच्छा के अनुरूप एक अलग देश पाकिस्तान दे दिया गया। भारत माता के दो टुकड़े कर दिए गए।

प्रश्न यह है कि जिन मुसलमानों ने मुस्लिम लीग के पक्ष में यानि पाकिस्तान-निर्माण के पक्ष में मतदान किया, क्या वे सब पाकिस्तान गए? उत्तर है – नहीं। उनमें से बहुत कम लोग पाकिस्तान गए। मुसलमान करोड़ों की संख्या में भारत में ही रहे। प्रश्न उठता है कि यदि उन्हें यहीं रहना था, हिंदुओं के साथ ही रहना था तो पाकिस्तान बनाने के पक्ष में मुस्लिम लीग को मत क्यों दिया? क्यों नहीं कांग्रेस को मत दिया?

लोग कहेंगे कि जो हुआ सो हुआ। जिन्होंने पाकिस्तान निर्माण के लिए वोट दिया, वे अब तो जिंदा भी नहीं होंगे, तो उनके वंशजों को इसका दोष क्यों दें? और, जिन्होंने पाकिस्तान बनाने के लिए 1945 में वोट दिया, देश की आजादी के समय 1947 में उनका मन बदल भी सकता है। उन्हें शायद यही ठीक लगा हो कि भारत के साथ रहना है। परन्तु इस तर्क से भी 1945-46 के चुनावों में मुस्लिम मतदाताओं की भूमिका बदल नहीं जाती।

इस तथ्य को यदि भारत का मुस्लिम समुदाय खुले मन से स्वीकार कर लेता है तो समझिए कि एक नई शुरुआत होगी। खुले मन से स्वीकार करना यानि बिना किसी संकोच के यह स्वीकार करना, सार्वजनिक रूप से, कि हमारे 1945-46 के पूर्वजों ने पाकिस्तान बनाने के लिए मुस्लिम लीग को वोट देकर ठीक नहीं किया और यह भी कि जिन्ना और मुस्लिम लीग का अलग राष्ट्र का सिद्धांत गलत था, और यह भी कि भारत में हिंदू और मुसलमान भाईचारे के साथ रह सकते हैं।

जब तक इतिहास का यह सच स्वीकार नहीं करेंगे तथा उस सच के अनुसार अपना विचार और व्यवहार नहीं बदलेंगे तब तक हिंदू-मुस्लिम भाईचारे की बात बेमानी है।

– रामस्वरूप अग्रवाल

भारत में हिंदू हो रहे हैं अल्पसंख्यक

कई राज्यों में मुसलमान व ईसाई बहुसंख्यक होते हुए भी अल्पसंख्यकों के अधिकार व सुविधाएं ले रहे हैं

भारत की सबसे बड़ी अदालत–सर्वोच्च न्यायालय में बीते 28 मार्च को केन्द्र सरकार ने कहा है कि राज्य सरकारें चाहें तो हिंदुओं को अपने राज्य में 'अल्पसंख्यक' घोषित कर सकती हैं, यदि उस राज्य में हिंदू समुदाय बहुसंख्या में नहीं रह गया है।

तो क्या अपने ही देश में हिंदू अब अल्पसंख्यक बनता जा रहा है? जी हाँ, वर्तमान में 6 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में हिंदू अल्पसंख्यक हो गया है।

चिंताजनक है स्थिति

मिजोरम राज्य में हिंदू मात्र 2.75 प्रतिशत, नागालैंड में मात्र 8.75 प्रतिशत और मेघालय में मात्र 11.53 प्रतिशत रह गए हैं। जबकि इन राज्यों में 1941 तक हिंदुओं की जनसंख्या 99 प्रतिशत या इससे ज्यादा थी।

अरुणाचल प्रदेश में आज हिंदुओं की जनसंख्या मात्र 29 प्रतिशत, मणिपुर में 31.39 प्रतिशत, जम्मू–कश्मीर में मात्र 28.44 प्रतिशत तथा लक्षद्वीप में मात्र 2.5 प्रतिशत रह गई है। जबकि इन सभी राज्यों में हिंदू कभी न कभी बहुसंख्यक आबादी में रहा है। हिंदू अपने ही देश के इतने बड़े भू–भाग में आज अल्पसंख्यक हो गया है– यह चिंता का विषय होना चाहिए।

परन्तु यहां प्रश्न दूसरा उभर रहा है। भारत में सामान्यता मुसलमान एवं ईसाइयों को अल्पसंख्यक माना जा कर इन्हें विशेष सुविधाएं एवं लाभ दिया जाता रहा है।

अल्पसंख्यकों के अधिकार एवं लाभ

संविधान के अनुच्छेद 29 व 30 को मिलाकर अर्थ निकाला जाए तो 'धार्मिक एवं भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा, लिपि एवं संस्कृति का संरक्षण करने के लिए अपनी रुचि एवं पसंद की शैक्षणिक संस्थाओं (यथा स्कूल, कॉलेज, मेडिकल, इंजिनियरिंग कॉलेज आदि) की स्थापना करने एवं अपने तरीके से प्रशासन करने का अधिकार दिया गया है।' यह अधिकार बहुसंख्यक हिंदू समाज को नहीं दिया गया है। भारत में अल्पसंख्यक समुदायों के कल्याण हेतु केन्द्र तथा राज्य स्तर पर विशेष योजनाएँ, सुविधाएं एवं लाभ देने की व्यवस्था रहती है। इसके लिए प्रतिवर्ष कई हजार करोड़ रुपए खर्च किए जाते हैं। अल्पसंख्यकों को बहुत कम ब्याज पर ऋण, छात्रवृत्तियाँ, सरकारी सेवाओं में चयन हेतु प्रशिक्षण, निःशुल्क कोचिंग, कौशल–विकास, छात्रावास आदि कई प्रकार के लाभ एवं सहायता दी जाती है। केन्द्र द्वारा अल्पसंख्यक कल्याण के लिए राज्य सरकारों को करोड़ों रुपयों की राशि का आवंटन किया जाता है। सरकारी सहायता प्राप्त अल्पसंख्यक संस्थाओं में अल्पसंख्यक समुदाय के विद्यार्थियों को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए, दिल्ली की प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्था 'जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय' को

6 राज्यों एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेशों में

हिंदू अल्पसंख्यक स्थिति

मिजोरम	– 2.75 प्रतिशत
नागालैंड	**– 8.75 प्रतिशत**
मेघालय	– 11.53 प्रतिशत
अरुणाचल प्रदेश	**– 29 प्रतिशत**
मणिपुर	– 31.39 प्रतिशत
जम्मू–कश्मीर	**– 28.44 प्रतिशत**
लक्षद्वीप	– 2.5 प्रतिशत

धार्मिक अल्पसंख्यक का दर्जा मिला होने के कारण लगभग 50 प्रतिशत सीटों पर मुस्लिम समाज के बच्चों को प्रवेश दिया जाता है। वहां पर जाति आधारित आरक्षण लागू नहीं होता। 2014 से अब तक अल्पसंख्यक समुदाय के लगभग 5 करोड़ विद्यार्थियों को केन्द्र सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जा चुकी है।

अल्पसंख्यक परिभाषित नहीं

संविधान में कहीं भी यह नहीं बताया गया है कि अल्पसंख्यक किसे माना जाए। केन्द्र सरकार ने 1993 में 'राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग' बनाकर उसकी धारा 2(सी) के अंतर्गत देश के 5 धार्मिक समुदायों– मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिख एवं बौद्ध को अल्पसंख्यक घोषित कर दिया। सन् 2004 में इस सूची में जैन समुदाय को भी जोड़ा गया।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

परन्तु 2002 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 'टीएमए पाई फाउंडेशन' के वाद में 11 जजों की पीठ ने निर्णय दिया कि संविधान में अल्पसंख्यकों को दिए गए अधिकारों (अनुच्छेद 30) के संदर्भ में किसे अल्पसंख्यक घोषित किया जाए इसका निर्णय केन्द्रीय स्तर पर नहीं किया जाकर राज्यों के स्तर पर वहां की आबादी को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अंतिम माना जाता है। परन्तु न तो केन्द्र ने अल्पसंख्यकों के संबंध में अपनी घोषणा वापस ली और न ही किसी राज्य ने अपने स्तर पर यह घोषणा की कि उस राज्य में अल्पसंख्यकों को मिलने वाली सुविधाएं एवं लाभ किन समुदायों को मिलेंगे। परिणामतः देश के 8 राज्यों में मुसलमान व ईसाई बहुसंख्यक होते हुए भी अल्पसंख्यकों के अधिकार व सुविधाएं ले रहे हैं।

जनहित याचिका

दिल्ली के एक वकील अश्विनी उपाध्याय ने सर्वोच्च न्यायालय में कुछ समय पूर्व एक जनहित याचिका प्रस्तुत कर कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व निर्णय को देखते हुए केन्द्र सरकार द्वारा 1993 में घोषित 'अल्पसंख्यक समुदाय' की सूची रद्द कर दी जाए और राज्यों को निर्देश दिया जावे कि वे अपने राज्य की जनसंख्या के अनुसार राज्य स्तर पर 'अल्पसंख्यक समुदायों' की घोषणा करे।

वर्तमान स्थिति

आज स्थिति यह है कि मिजोरम, मेघालय और नागालैंड में ईसाइयों की जनसंख्या 85 प्रतिशत या ज्यादा होते हुए भी वे वहां अल्पसंख्यकों के लिए घोषित सारी सुविधा, लाभ एवं अधिकारों का उपयोग कर रहे हैं जबकि ये अधिकार व लाभ वहां के अल्पसंख्यक हिन्दुओं को मिलने चाहिए। जम्मू–कश्मीर एवं लक्षद्वीप में मुसलमान बहुसंख्यक होते हुए भी अल्पसंख्यकों को दिए जाने वाले लाभ ले रहे हैं जबकि वहां भी इसके हकदार हिंदू हैं।

यह कैसी स्वाधीनता?

प्रश्न स्वाभाविक रूप से लोगों के मन–मस्तिष्क में आता है कि तत्कालीन कांग्रेसी नेतृत्व ने भारत की कैसी स्वाधीनता स्वीकार कर ली? मुस्लिम नेतृत्व की मांग पर देश का विभाजन स्वीकार कर लेने के बाद जो भू–भाग भारत के नाम पर बच गया उसे 'हिंदू–राष्ट्र' घोषित नहीं किया। यहाँ तक कि जो मातृभूमि के टुकड़े करने के जिम्मेवार थे, उन्हीं को स्वाधीन भारत में विशेषाधिकार और विशेष सुविधाएं अल्पसंख्यक के नाम पर दी जाने लगी और निरंतर दी जा रही हैं। अब जबकि हिंदू आठ राज्यों में अल्पसंख्यक हो गया है तो भी वे विशेष अधिकार एवं सुविधाएं उसे न देकर वहां के बहुसंख्यक मुसलमानों व ईसाइयों को ही दी जा रही हैं। ●

–(रामस्वरूप)

जिला आधारित अल्पसंख्यक दर्जे के पक्ष में है असम

असम के मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा जिलेवार जनगणना कराने के पक्ष में हैं। उन्होंने कहा कि यद्यपि असम में राज्य आधार पर हिंदू बहुसंख्यक समुदाय है, परन्तु असम के 9 जिलों में मुसलमान बहुसंख्यक समुदाय हो गया है, तब इन जिलों में उन्हें विशेष अधिकार और सुविधाएं क्यों? मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार राष्ट्रीय आधार पर अल्पसंख्यकों की घोषणा करने के नियम के बजाए जिलेवार धार्मिक समूहों को अल्पसंख्यक दर्जा देने के पक्ष में हैं।

श्री बिस्वा सरमा ने बीती 30 मार्च को विधानसभा में बताया कि असम के चाय बागान के लोग अल्पसंख्यक श्रेणी में नहीं आते। उनके पास ओबीसी प्रमाण पत्र हैं फिर भी वे ईसाई के रूप में अल्पसंख्यक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

बता दें कि 1951 में असम में 24.68 प्रतिशत मुस्लिम थे जो 2011 की जनगणना के समय बढ़कर 34.2 प्रतिशत हो गए हैं।

गाय के गोबर से बना रहे हैं चप्पल

गोबर उत्पादों से कमा रहे हैं प्रतिमाह तीन लाख रुपये

इस वर्ष का बजट प्रस्तुत करने के लिए जब छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल विधान सभा पहुंचे तब उनके हाथ में गोबर से बना बैग था। ये बैग रितेश अग्रवाल और उनकी संस्था 'एक पहल' ने दस दिन की मेहनत के बाद तैयार किया, जिसकी चर्चा देशभर में हुई।

रायपुर स्थित गोकुल नगर के रहने वाले गौपालक रितेश गाय के गोबर से दर्जनों चीजें जैसे बैग, पर्स, मूर्तियां, दीपक, ईंट, पेंट, अबीर-गुलाल और यहां तक कि चप्पल भी बना रहे हैं जिनकी अच्छी खासी मांग है। इससे वे प्रतिमाह तीन लाख रुपए तो कमा ही रहे हैं साथ ही कई लोगों को रोजगार देकर आत्मनिर्भर भी बना चुके हैं।

पढ़ाई के बाद रितेश ने कई कंपनियों में नौकरी की लेकिन उनका मन नौकरी में नहीं लग रहा था। वे अक्सर सड़कों पर घूमती गायें देखते जो कचरा खाने की वजह से बीमार हो जाती थीं और कई दुर्घटनाओं का शिकार भी हो जाती थीं। नौकरी छोड़ वे एक गौशाला से जुड़े और गौ सेवा का काम शुरू किया।

गौशाला में उन्होंने गाय के गोबर से बनने वाले उत्पादों का काम सीखा। इसी दौरान 2018-19 में जब छत्तीसगढ़ सरकार ने गौवंश को संरक्षित करने के लिए गोठान मॉडल शुरू किया तो रितेश भी इस से जुड़े और गोबर से विभिन्न प्रकार की चीज़ें बनाने की ट्रेनिंग के लिए वे जयपुर और हिमाचल प्रदेश गए। ट्रेनिंग से लौटकर उन्होंने 2019 में 'एक पहल' नामक संस्था की स्थापना की, जिसके अंतर्गत गाय के गोबर से बने विभिन्न उत्पाद तैयार किए जाने लगे।

गोबर से बनाई चप्पल

कुछ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों, चूना और गोबर के पाउडर को मिलाकर वे 1 किलो गोबर से 10 चप्पलें (5 जोड़ी) बनाते हैं। चप्पल 3-4 घंटे बारिश में भीग भी जाए तो खराब नहीं होती, धूप में सुखाकर इसे पुनः काम में लिया जा सकता है, जो पैरों को ठंडक पहुँचाने का काम भी करती है। एक जोड़ी की कीमत 400 रुपये है।

गोबर से बनी चप्पल को लेकर उन्होंने एक नवीन प्रयोग भी किया। उन्होंने कुछ दिनों तक यह चप्पल ब्लडप्रेशर और मधुमेह के मरीजों को पहनाई, जिसके सकारात्मक नतीजे देखने को मिल रहे हैं। अब तक उन्हें गोबर से बनी एक हजार जोड़ी चप्पलों के ऑर्डर मिल चुके हैं।

गोबर से अबीर और गुलाल

गोबर को सुखा कर पहले पाउडर में बदला जाता है और उसमें खुशबू के लिए फूलों की सूखी पत्तियों के पाउडर को मिलाया जाता है। इसके बाद उसमें कस्टर्ड पाउडर मिलाया जाता है। पाउडर को अलग-अलग रंग देने के लिए भी प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग होता है। पीले रंग के लिए हल्दी, हरे के लिए धनिये की पत्ती काम में ली जाती है। बाजार में यह 300 रुपये किलो तक बिकता है।

सात हजार से अधिक मृतकों का करवाया दाह-संस्कार

कोरोना के दौरान जब लगातार लोगों की मौतें होने लगीं तो दाह संस्कार के लिए लकड़ियों की मांग बढ़ी, उन्होंने गोबर से लकड़ी बनानी शुरू की। अब तक वे 7 हजार से अधिक दाह-संस्कारों के लिए गोबर से बनी लकड़ी उपलब्ध करा चुके हैं।

एक हजार रुपए से की जा सकती है शुरुआत

'एक पहल' संस्था-प्रमुख रितेश बताते हैं कि गो उत्पाद ईंट बनाने की शुरुआत मात्र एक हजार रुपए से की जा सकती है। ईंट तैयार करने के लिए एक सांचे की जरूरत होती है। गोबर से बनी ईंट की विशेषता यह है कि यह सामान्य ईंट के मुकाबले हल्की होती है। गर्मी के दिनों में इससे बने घरों में ठंडक रहती है।

लोगों को दिया रोजगार

स्वरोजगार और स्वावलंबन को बढ़ावा देते हुए रितेश ने स्थानीय लोगों को भी इस काम से जोड़ा है। काम सीखने के बाद उन्हें नौकरी पर रख लिया जाता है। संस्था के पास गोबर से बने उत्पादों की माँग न सिर्फ़ छत्तीसगढ़ बल्कि आस-पास के राज्यों से भी आ रही है, जिससे वे सालाना 36 लाख रुपए तक कमा रहे हैं। ●

– (मनोज गर्ग)

लखपति गायें

राजस्थान में झुंझुनूं जिले के भोड़की गांव स्थित गौशाला (श्री जमवाय ज्योति गौशाला) में 28 लखपति गायें रहती हैं। सुनने में भले ही विचित्र लगे परन्तु यह सच है। गौ-संरक्षण की दृष्टि से एक नई पहल का आरंभ भोड़की गांव से हुआ है।

2015 में आपसी सहयोग से वहां गौशाला बनी। गौशाला समिति ने एक नई परम्परा शुरु की -गायों को गोद लेने की। जिस गाय को कोई व्यक्ति गोद लेता है, उसका एक नाम (सीता, गीता, मोहना आदि) रख कर उसके नाम से बैंक में एक लाख रुपयों की एफडी करा देता है। अब तक 28 गायों को गोद लिया जा चुका है। गौशाला में गायों की सेवा के लिए कई योजनाएं बनाई गई हैं जिनसे प्रतिमाह लगभग 2 लाख रुपयों की प्राप्ति होती है जिससे गायों के लिए चारे आदि की व्यवस्था की जाती है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी लगभग एक हजार गायें उस गौशाला में हैं। दो बीघा जमीन पर गौशाला शुरु हुई थी। लोगों ने गौशाला को अपनी जमीन दान की। वर्तमान में गौशाला के पास 60 बीघा से ज्यादा जमीन है।

यहाँ गायों की देखरेख 18-20 गौ सेवकों के जिम्मे है। गायों के इलाज के लिए वहां एक अस्पताल बनवाया जा रहा है।

सूत्र बताते हैं कि गौशाला में प्रतिदिन लगभग सौ लीटर दूध निकाला जाता है तथा घी का निर्माण होता है। गौशाला परिसर में ही जैविक खाद बनाने का संयंत्र लगाया गया है जहां पर गोबर से केंचुआ खाद (वर्मी कम्पोस्ट) तैयार होती है।

गौशाला में एक शिशु-उद्यान तैयार किया गया है जहां बच्चे मौज-मस्ती करते हैं, साथ ही वे गौशाला तथा गायों के संसार से भी परिचित होते हैं।

भोड़की की 'श्री जमवाय ज्योति गौशाला' से देश भर के गौ-सेवक तथा गौशालाओं के कार्यकर्ता प्रेरणा लेकर ऐसी ही योजनाएं बनाएंगे तो गौ-संवर्धन के कार्य को अवश्य गति मिलेगी। ●

श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र का लोकार्पण

भूमि को बंजर बनाकर चुकाई गई विकास की कीमत

हमने अपनी जमीन को बंजर बनाकर विकास की कीमत चुकाई है। हरित क्रांति ने खाद्यान्न संकट दूर किया है, लेकिन इससे कुछ दोष भी आए हैं। आज हम खाद-बीज के लिए परावलंबी हो गए। स्वास्थ्य पर विपरीत असर से बीमारियां बढ़ती गई। उक्त विचार संघ के पूर्व सरकार्यवाह सुरेश भैय्या जी जोशी ने 12 अप्रैल को जाखोड़ा (कोटा) में श्रीरामशान्ताय जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र के लोकार्पण समारोह में प्रकट किए।

उन्होंने कहा कि किसान बर्बाद होकर आत्महत्या करने को मजबूर है। क्रांति के नाम पर एक दुष्चक्र में फंसते चले गए, आज हमें इस चक्र को तोड़ने का पुरुषार्थ करना होगा। हमें क्रांति की नहीं बल्कि संक्रांति की आवश्यकता है। भौतिक संपदा का विकास ही नहीं करना बल्कि प्राकृतिक संपदा को भी बचाना है। भूमि को माता माना है तो मातृवत व्यवहार भी करना होगा। भूमि की संवेदना को समझकर अपनी वेदना से जोड़कर पुरुषार्थ करना होगा। गाँव-गाँव का किसान जैविक कृषि को मान्यता दे क्योंकि जैविक कृषि से ही भूमि का सुपोषण संभव होगा।

कृषि मंत्री श्री नरेन्द्र तोमर ने कहा कि रासायनिक खेती ने जमीन को अनुपजाऊ बनाया है। इससे जलवायु परिवर्तन का संकट खड़ा हुआ है। आज प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने, लागत कम करने के लिए, अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए और कृषि निर्यात बढ़ाने के लिए हमें जैविक और प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा।

लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने कहा कि आने वाले समय में मिट्टी को बचाना सबसे बड़ी चुनौती होगी। मिट्टी को बचाना और शुद्ध आहार उपलब्ध कराना ही मानव सेवा का पुनीत कार्य है। समाज समझ रहा है कि शुद्ध आहार ही संभावित बीमारियों से बचाएगा। आज मेढ़ पर फलदार पौधे लगाने से, गौपालन पर कम ब्याज पर पैसा देने से किसान की आमदनी बढ़ेगी। बहुआयामी आय से किसान आत्म-निर्भर बनेगा।

कोटा जिले के जाखोड़ा गांव में 6.4 हैक्टेयर भू-भाग पर स्थापित जैविक संस्थान के प्रबंध निदेशक ताराचन्द गोयल ने बताया कि जैविक कृषि में गो को मूल आधार मानते हुए इनसे प्राप्त पंचगव्य के उपयोग के लिए गो-गृह बनाया हुआ है। मेढ़ पर 100 प्रकार के औषधीय पौधे लगाए गए हैं। कम लागत की बांस से निर्मित एक हजार फीट की नर्सरी में एक माह में सब्जी व फलदार पेड़ की 40 हजार पौध तैयार की जा सकती है।

बलिदान दिवस (17 मई) पर विशेष

अमर क्रांतिवीर महावीर सिंह

लाला लाजपत राय पर लाठियां बरसाने वाले अंग्रेज पुलिस अधिकारी सांडर्स को मारने की योजना में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद तथा राजगुरु के साथ महावीर सिंह भी शामिल रहे। सांडर्स–वध के बाद सरदार भगत सिंह सहित अनेक क्रांतिकारी अंग्रेजों के लिए चुनौती बन चुके थे। घटनास्थल से भगत सिंह और राजगुरु को कार से भगा ले जाने वाले महावीर सिंह ही थे। उसी दौरान दिल्ली असेम्बली में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा बम फेंके जाने के बाद सख्ती के साथ क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी शुरु हो गई थी। घटना में शामिल क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर मुकदमा चलाने के लिए लाहौर ले जाया गया। महावीर सिंह भी पकड़े गए। सांडर्स की हत्या में सहायता करने के अभियोग में महावीर सिंह और सात अन्य क्रांतिकारी साथियों को आजन्म कारावास की सजा सुनाई गयी। कुछ दिनों पंजाब की जेलों में रखने के बाद उन्हें कर्नाटक स्थित बेल्लारी जेल ले जाया गया जहां से उन्हें कुछ साथियों के साथ अण्डमान (काला–पानी) भेज दिया गया। वहां इंसान को जानवर से भी बदतर हालत में रखा जाता था।

महावीर सिंह के नेतृत्व में कैदियों ने उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार, अच्छा खाना, पढ़ने–लिखने की सुविधा तथा रात में रोशनी की व्यवस्था आदि मांगों को लेकर 12 मई, 1933 को जेल प्रशासन के विरुद्ध अनशन प्रारम्भ किया। अंग्रेजों ने इस भूख–हड़ताल को तोड़ने की भरपूर कोशिश की लेकिन हर बार उनकी कोशिशें असफल रहीं। इसके लिए उन्होंने महावीर सिंह को अनेक प्रकार के लोभ–लालच भी दिए लेकिन वे अपने निर्णय से टस से मस नहीं हुए। रोटियों में कंकड़ व कीड़े, सीलन भरी कोठरी, रात में फर्श पर जहरीले जानवरों की आवाजाही जैसी नारकीय यातनाओं के विरुद्ध महावीर सिंह का प्रण और पक्का होता गया।

महावीर सिंह के मुँह में जबरन खाना ठूंसने के प्रयास में जब अंग्रेज विफल हो गए तो आखिर में उन्हें जमीन पर लेटाकर आठ–आठ पुलिसकर्मियों द्वारा पकड़कर प्लास्टिक की नली द्वारा नाक से उन्हें जबरन दूध पिलाने की कोशिश की गई। हठी महावीर सिंह ने पूरी ताकत के साथ पुरजोर विरोध किया और इसी बीच दूध उनके पेट में न जाकर फेंफड़ों में भर गया, परिणाम स्वरूप माँ भारती के इस लाल ने जेल परिसर में ही तड़प–तड़प कर 17 मई, 1933 को मृत्यु का वरण किया। बाद में उनकी मृत देह को अंग्रेजों ने रात के अंधेरे में पत्थरों से बाँधकर समुद्र में फेंक दिया।

स्वाधीनता की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर ऐसे देशभक्त को सादर वंदन। ●

हमें देश के युवाओं को रोजगारोन्मुखी होने के लिए प्रेरित करना होगा

समाज की सज्जन शक्ति से आज विश्व को अनेक आशाएं हैं, हमें अपने सत्व को छोड़े बिना सक्रियता के साथ आगे बढ़ना है। हमें देश के युवाओं को रोजगारोन्मुखी होने के लिए प्रेरित करना पड़ेगा जिससे रोजगार बढ़ेंगे और भारत स्वावलंबी बनेगा। यह कहना है संघ के क्षेत्र संघचालक डॉ.रमेश अग्रवाल का। वे स्वदेशी जागरण मंच की 'स्वावलम्बी भारत योजना' पर आयोजित सेवा सदन में एक कार्यशाला को बीती 13 अप्रैल को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि बेरोजगारी की समस्या के समाधान हेतु व्यापक प्रयत्नों जैसे जनजागरण, प्रबोधन व योजना की आवश्यकता है। उसके लिए आर्थिक संगठनों के साथ–साथ शैक्षिक व सामाजिक संगठनों की एक व्यापक पहल है– 'स्वावलंबी भारत अभियान'

अभियान से जुड़े अन्य संगठन

स्वावलंबी भारत अभियान में स्वदेशी जागरण मंच के साथ सेवा भारती, सहकार भारती, भारतीय किसान संघ, विश्व हिंदू परिषद, लघु उद्योग भारती, भारतीय मजदूर संघ, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, वनवासी कल्याण परिषद, अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत, भाजपा सहित कुल 11 संगठन मिलकर आजादी के 'अमृत महोत्सव' पर सम्पूर्ण भारत में इस अभियान को गाँव–गाँव तक पहुँचायेंगे।

कार्यशाला में स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख डॉ. राजकुमार चतुर्वेदी, प्रांत संगठक श्री मनोहरशरण सहित सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

20 महिलाओं को चूड़ी में नग लगाने की अत्याधुनिक मशीनें देकर बनाया आत्मनिर्भर

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने एवं उनकी आय बढ़ाने की शुरुआत लघु उद्योग भारती ने पाली शहर से की है। इसी क्रम में बीते दिनों पाली नगर परिषद के सभागार में 'महिला शक्ति स्वावलंबन कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह ने 20 महिलाओं को चूड़ियों में नग लगाने की अत्याधुनिक मशीनें दी। विधायक ज्ञानचंद पारख ने बताया कि अब तक 700 महिलाओं को ऐसी मशीनें दी जा चुकी हैं तथा जिले की 50 हजार महिलाओं को आगामी दिनों में देने का लक्ष्य है।

नौकरी की मानसिकता बदलकर स्वरोजगार उपलब्ध कराना होगा

सम्पूर्ण भारत में स्वदेशी जागरण मंच द्वारा 'स्वावलम्बी भारत अभियान'चलाया जा रहा है। अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत को पूर्ण रोजगारयुक्त करने और उच्चतम आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक व्यापक योजना तैयार करना है, इसी क्रम में बीती 3 अप्रैल को जोधपुर में मंच और संघ के आर्थिक विषयों के 11 विविध संगठनों के समन्वय से एक दिवसीय प्रांतीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए मंच के अ.भा.संगठक श्री कश्मीरी लाल ने कहा कि पिछले 200 वर्षों से भारतीय लोगों की मानसिकता लॉर्ड मैकाले की नीतियों के कारण स्वरोजगार परक न होकर नौकरी प्राप्त करने की रही है। आज हमें इस मानसिकता को परिवर्तित करने की जरूरत है तभी हम 2030 तक 10 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बन सकेंगे और भारत के प्रत्येक नागरिक को रोजगार उपलब्ध करा सकेंगे।

उन्होंने आगे कहा की वर्तमान में ऐसे परिदृश्य बनाने की आवश्यकता है कि आज का युवा स्वयं अपना रोजगार बिना किसी बाधा के शुरू कर सके और भारत को सभी क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना सके। यूक्रेन और रूस के युद्ध तथा कोरोना काल के बाद यह पहली आवश्यकता हो गई है कि हम पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बनें। भारत के 1100 विश्वविद्यालयों और 53 हजार महाविद्यालयों में आए सभी छात्रों को स्वरोजगार उपलब्ध कराना है।

ज्ञात हो कि संघ की अ.भा.प्रतिनिधि सभा ने भी इस वर्ष बेरोजगारी समाप्त करने के लिए स्वरोजगार उपलब्ध कराने का प्रस्ताव पारित किया है।

संघ के क्षेत्रीय संपर्क प्रमुख श्री श्याममनोहर ने कहा कि स्वावलम्बी भारत अभियान को धरातल पर लाने के लिए जिला स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता है। हम जिले के विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों को जोड़ कर इस अभियान को सफल बना सकते हैं। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए महिलाओं को भी इसमें भागीदारी निभानी पड़ेगी।

लघु उद्योग भारती के प्रांत अध्यक्ष श्री रामानंद काबरा का कहना था कि नौकरियों से देश नहीं बनता है। देश को बनाने के लिए स्वरोजगार की आवश्यकता होती है।

स्वेदशी जागरण मंच के अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख डॉ. धर्मेन्द्र दुबे के अनुसार हम सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से भी युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर सकते हैं और देश को आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

क्रांतिकारी रासबिहारी बोस

जन्म दिवस (25 मई) पर विशेष

ब्रिटिश राज के विरुद्ध भारत की आजादी के लिए आजीवन प्रयासरत रहने वाले रासबिहारी बोस असाधारण प्रतिभा के धनी थे। बंग-भंग के समय से ही आप क्रांतिकारी कार्यों में रुचि लेने लगे थे। इण्डियन नेशनल आर्मी, आजाद हिंद फौज का गठन हो या बसंत कुमार विश्वास के साथ दिल्ली में वायसराय की सवारी पर बम फेंकने की घटना या फिर देशव्यापी सशस्त्र क्रांति की योजना हो, इन सब में रासबिहारी बोस की महती भूमिका रही थी।

आरंभ से रासबिहारी बोस क्रांतिकारी संगठन युगान्तर से जुड़े। बाद में अरविन्द घोष के शिष्य यतीन्द्रनाथ बनर्जी के सम्पर्क में आकर पंजाब के प्रमुख क्रांतिकारियों के साथ दोगुने जोश से क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सेना में क्रांतिकारी साथियों की घुसपैठ की योजना के प्रमुख सूत्रधार आप ही थे। हालांकि यह प्रयास असफल रहा और क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश पुलिस ने आपको पकड़ने की भरपूर कोशिश की लेकिन आप राजा पीएन टैगोर छद्म नाम से जापान के शहर शंघाई पहुँच गए थे।

जापान में अंग्रेजी के अध्यापक होने के साथ-साथ लेखक, पत्रकार बनकर 'न्यू एशिया' समाचार पत्र निकाला, टोकियो में होटल खोलकर भारतीयों को संगठित किया। जापानी महिला से विवाह कर वहाँ की नागरिकता प्राप्त की। मार्च 1942 में टोक्यो में एक सम्मेलन आमंत्रित कर 'इंडियन इंडिपेंडेंस लीग' की स्थापना कर भारत की आजादी के लिए एक सेना बनाने का प्रस्ताव रखा, आजाद हिंद फौज की स्थापना कर उसकी कमान सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दी।

भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए अथक परिश्रम करते हुए उनके शरीर को क्षय रोग ने पकड़ लिया था। स्वतंत्र भारत का सपना लिए हुए 21 जनवरी, 1945 को आप चिरशांति में लीन हो गए।

प.बंगाल के बर्धमान जिले के सुबलदहा ग्राम में 25 मई, 1886 को जन्मे भारत माता के इस लाडले को उसके जन्म दिवस पर शत शत नमन। ●

'ध्येय यात्रा' पुस्तक का दिल्ली में विमोचन

हम इतिहास लिखने वाले नहीं बल्कि इतिहास बनाने वाले हैं- होसबाले

'छात्र आंदोलन का इतिहास लिखने वालों ने विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ न्याय नहीं किया है। हम इतिहास लिखने वाले नहीं बल्कि इतिहास बनाने वाले हैं।' उक्त विचार संघ के सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले ने 15 अप्रैल को दिल्ली के अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर में विद्यार्थी परिषद की सात दशकों की यात्रा को दर्शाती पुस्तक 'ध्येय यात्रा' के विमोचन अवसर पर व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि ध्येय-यात्रा का प्रकाशन कोई आत्म-स्तुति के लिए नहीं किया गया है बल्कि इसके पीछे यह उद्देश्य है कि आगामी कार्यकर्ताओं को कार्य की प्रेरणा और आधार मिल सके तथा छात्र संगठन का जो विशिष्ट दर्शन जिसे परिषद ने विकसित किया है, उससे लोग परिचित हो सकें, और समझ सकें।

संघ के अ.भा. प्रचार प्रमुख श्री सुनील आम्बेकर ने कहा कि विद्यार्थी परिषद ठहरा हुआ इतिहास नहीं है, परिषद के आयाम लगातार बढ़ रहे हैं। समाज जीवन के नए-नए विषयों पर आंदोलन जारी है, जो यह विद्यार्थी परिषद की यात्रा के साथ एक 'ध्येय' से जुड़ा है, हम सब उसके यात्री बन गए हैं। इस सतत प्रवाह का रूपांतरण करने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

विमोचन कार्यक्रम में पूर्व चुनाव आयुक्त सुनील अरोड़ा सहित वरिष्ठ पत्रकार, विश्वविद्यालयों के कुलपति एवं कई देशों के राजदूत तथा समाज जीवन में अपने कार्य से पहचान बनाने वाले सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

छात्र संगठन 'अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद' की स्थापना 9 जुलाई, 1949 में की गई थी। इसकी स्थापना का उद्देश्य है ''एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण में तथा अपनी संस्कृति को बचाए-बनाए रखने के कार्य में विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों में पढ़ने वाले युवाओं की समुचित भागीदारी सुनिश्चित करना''। विद्यार्थी परिषद छात्रों की समस्याओं के समाधान हेतु संघर्षरत रहता है। परिषद ने राष्ट्रहित से जुड़े कई प्रश्नों पर देशव्यापी आंदोलन भी किए हैं। 2019-20 में इसके 33 लाख से ज्यादा विद्यार्थी सदस्य थे।

मुंबई के प्रो. यशवंत केलकर इसके प्रथम मुख्य कार्यवाहक बने। वर्तमान में यह विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है। भारत के सभी प्रांतों के लगभग सभी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में विद्यार्थी परिषद सक्रिय दिखाई देती है।

योग को समर्पित है 126 वर्षीय बाबा का जीवन

वाराणसी के कबीर कालोनी में रहने वाले योगगुरु बाबा शिवानंद का सम्पूर्ण जीवन सादगी, सरलता और योग को पूर्ण रूप से समर्पित है। वे 6 वर्ष की अवस्था से ही योग कर रहे हैं, आज उन्हें योग करते हुए 120 वर्ष हो गए। इस उम्र में भी वे पूर्ण रूप से स्वस्थ और निरोग हैं। रोजाना 3 बजे उठना, सैर पर जाना, एक घंटा योग करना तथा उबला हुआ खाना, दाल व सेंधा नमक उनकी प्रतिदिन की दिनचर्या का हिस्सा है। इस उम्र में भी वे मकान की तीसरी मंजिल तक सीढ़ियों से आराम से चढ़ते-उतरते हैं। पूर्ण रूप से शाकाहारी बाबा कभी स्कूल नहीं गए लेकिन अंग्रेजी भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ है।

8 अगस्त, 1896 को बंगाल के श्रीहट्टी जिले में जन्में शिवानंद बाबा माता-पिता की मृत्यु के बाद काशी आ गए और गुरु ओंकारनंद से योग की शिक्षा प्राप्त कर दुनिया भर में योग को प्रचारित करते रहे। आज भी वे निरंतर योग के प्रचार-प्रसार में लगे हुए हैं।

जानकारी हो कि बीती 22 मार्च को दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में आयोजित पद्म पुरस्कार सम्मान समारोह में 126 वर्षीय बाबा शिवानंद को पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सम्मान के लिए जब उनका नाम पुकारा गया तो पहले उन्होंने नंदी मुद्रा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और फिर राष्ट्रपति को प्रणाम कर अपनी योग कला का प्रदर्शन किया और नंगे पांव ही तेजी से दौड़ते हुए पहुँचे तो उनकी चुस्ती-फुर्ती देखकर सभी लोग दंग रह गए और प्रधानमंत्री सहित सभी उनके सम्मान में खड़े हो गए।

हिंदू समाज को बार–बार जगाना पड़ता है

शोभायात्रा किसी के विरुद्ध नहीं, समाज के जागरण की प्रतीक है

'हिंदू समाज की वृत्ति है कि वह जगने के बाद सो जाता है। समय –समय पर जागरण के कार्य होते हैं, फिर भी एक बार जगने के बाद पुनः सो जाता है, इसके लिए हमें समाज को जागृत करना जरूरी है। श्रीराम का चरित्र हमें इस विषय में प्रेरणा देता है। भगवान राम के आदर्श हमारे परिवारों में स्थापित हों, इस हेतु हमें प्रयास करना चाहिए। आयोजन समिति रामनवमी की शोभायात्रा के पश्चात् हमारा समाज उत्थान के अन्य कार्य भी करे।'

यह कथन है संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निंबाराम का। वे सरदारशहर में श्रीराम जन्मोत्सव आयोजन समिति को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी शोभायात्रा किसी के विरुद्ध नहीं है, अपितु यह हिन्दू समाज के उत्थान, जागरण और समभाव के प्रदर्शन की यात्रा है।

आज हमारा देश स्वाधीनता का अमृत महोत्सव मना रहा है और जब संघ 100 वर्ष का होगा तब देश में सकारात्मक परिवर्तन देखेंगे, हिन्दू समाज समरस बने, इस हेतु हम प्रयास करें। भारत विश्व गुरु था ऐसा कहा जाता है, जबकि भारत वास्तव में विश्वगुरु है। भारत द्वारा योग दिवस के प्रस्ताव को विश्व ने निर्विवाद रूप से स्वीकार किया है, पर हम इसे स्वीकार नहीं कर पाए हैं। परिवर्तन का भाव स्वयं से ही प्रारंभ हो, कुटुंब प्रबोधन का कार्य बढ़े, इस हेतु टोलियां बनाकर कार्य प्रारंभ हों।

समरसता भाव का प्रारंभ परिवार से ही हो, महापुरुषों के जीवन–दर्शन का प्रभाव भी अपने परिवारों में बढ़े।

मतांतरित होने के बजाय मैला ढोना स्वीकार किया

भारत के किसी भी कालखण्ड में धार्मिक स्तर पर ऊँच–नीच विभेद नहीं था। यह विभेद समाज ने बनाया न कि शास्त्रों ने। यह कहना है विश्व हिन्दू परिषद् के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री विनायक राव देशपाण्डे का। वे बीती 14 मार्च को जयपुर प्रांत की ओर से आयोजित 'सहोदर समागम' कार्यक्रम में बोल रहे थे। प्रागैतिहासिक घटनाओं के अनेक उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि भारत में गोत्र व्यवस्था इस बात को साबित करती है कि हर कार्यक्षेत्र में एक सी गोत्र व्यवस्था मिलती है जिन्हें हम उच्च वर्ग या निम्न वर्ग के नाम से, संवैधानिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत विभाजित करने लगे हैं। वे सभी किसी समय पर एक ही समतल पर विद्यमान थे।

विनायक राव देशपाण्डे जी ने कहा कि मुगलों के कालखण्ड में भारत के हिंदुओं को जबरन मतांतरण हेतु बाध्य किया जा रहा था। बहुत से हिंदुओं ने मतांतरण स्वीकार नहीं किया तब उनको मैला उठाने, पशुओं की चर्मकारी जैसे कार्यों के लिए बाध्य किया गया। हिन्दुओं ने अपने आत्म–स्वाभिमान को भंग करते हुए ये सभी कार्य किए किंतु सनातन धर्म में अपनी आस्था को बनाए रखा। हमें उन समूहों का ऋणी होना चाहिए जिनके इतने बड़े त्याग और बलिदान के फलस्वरूप हम सनातन धर्म के वर्तमान स्वरूप को बचाने में सफल हुए हैं।

सहोदर समागम कार्यक्रम में बहुत बड़ी संख्या में जयपुर के विभिन्न समाजों के प्रमुख प्रतिनिधियों के अतिरिक्त मातृशक्ति एवं धर्म गुरुओं की भी उपस्थिति रही।

मुस्लिम संगठन द्वारा केरल में एक और संघ कार्यकर्ता की हत्या

केरल में संघ कार्यकर्ताओं की हत्या का सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। कुछ समय पूर्व हुई कार्यकर्ता संजीथ (15 नवम्बर, 2021) की हत्या की घटना अभी ज्यादा पुरानी भी नहीं हुई थी कि बीती 16 अप्रैल की दोपहर में पलक्कड़ (केरल) के श्रीनिवासन (45) की जिहादियों ने तलवार व चाकुओं से गोदकर नृशंस हत्या कर दी। हत्यारे 3 मोटर साइकिलों पर बैठकर आए और बेरहमी से हत्या कर फरार हो गए। प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार श्रीनिवासन पर बड़ी बेरहमी से 20 वार किए गए थे। जिसके बाद उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहाँ उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। प्राप्त समाचारों के अनुसार हत्या में प्रतिबंधित संगठन 'पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया'(पीएफआई) की राजनीतिक शाखा 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इण्डिया' (एसडीपीआई) का हाथ बताया जा रहा है।

केरल भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सुरेन्द्रन ने बताया कि वामपंथी शासनकाल में संघ के 23 कार्यकर्ताओं की हत्या हो चुकी है। केरल में वामपंथियों और जिहादियों का बढ़ता आतंक न केवल चिंताजनक है बल्कि राज्य सरकार की सांप्रदायिक तुष्टीकरण नीति भी उक्त घटनाओं के लिए जिम्मेदार है।

रुबिका लियाकत को विशेषांक भेंट

एबीपी न्यूज चैनल की प्रसिद्ध एंकर सुश्री रुबिका लियाकत को नोएडा में पाथेय कण का 'स्वराज संघर्ष यात्रा' विशेषांक भेंट करते हुए संघ के सह क्षेत्र प्रचार प्रमुख श्री मनोज कुमार

• अजान के समय घर में संगीत बजाने पर महाराष्ट्र पुलिस ने किया केस दर्ज

औरंगाबाद की 'अमृतसाई प्लाजा' सोसायटी में रहने वाले किशोर मलकुनाइक के विरुद्ध पुलिस ने मात्र इसलिए केस दर्ज कर लिया कि अजान के समय वे अपने घर में संगीत बजा रहे थे।

• अलवर में तोड़ा गया 300 वर्ष पुराना मंदिर

राजस्थान के अलवर में 300 वर्ष पुराने मंदिर को अतिक्रमण बताकर गत 17 अप्रैल को तोड़ दिया गया। मंदिर प्रशासन ने बताया कि 'शिवलिंग' को कटर से काटा गया।

अलवर के ही कठूमर में एक हनुमान गौशाला पर भी बुलडोजर चलाने का समाचार आया है।

• उत्तर प्रदेश में मस्जिदों व मंदिरों से लाउडस्पीकर हटाए जा रहे हैं

योगी आदित्य नाथ की सरकार के आदेश पर उत्तर प्रदेश में मस्जिदों एवं मंदिरों से अधिकांश लाउडस्पीकर हटाए जा रहे हैं। जो लाउडस्पीकर रखे गए हैं, उनकी ध्वनि धीमी की जा रही है।

सामाजिक समरसता का प्रेरक उदाहरण

राजपूत परिवार ने दिया वाल्मीकि समाज के लोगों को भोजन का निमंत्रण, स्वागत में बिछाया कालीन

नागौर के रासलियावास गांव निवासी रिछपाल सिंह का पिछले दिनों निधन हो गया। गंगा प्रसादी के लिए राजपूत परिवार के सभी सदस्य गाजे-बाजे के साथ रामनिवास वाल्मीकि के घर गए और उनके परिवार के 35 सदस्यों को भोजन का निमंत्रण दिया। हिंदू समाज में मृत्यु के पश्चात् जो भोजन कराने की परम्परा प्रचलित है उसे गंगा प्रसादी कहा जाता है।

दूसरे दिन जब वाल्मीकि समाज के लोग रिछपाल सिंह की गंगा प्रसादी में पहुँचे तो नजारा देखने लायक था। चलने में परेशानी नहीं हो तथा पाँव पर मिट्टी नहीं लगे इसके लिए परिजनों ने वाल्मीकि बस्ती से लेकर अपने घर तक सफेद कालीन बिछाकर सभी का स्वागत-सत्कार किया। भोजन कराने के बाद सभी को दक्षिणा देकर विदा किया गया। वाल्मीकि समाज के भोजन करने के बाद ही रिछपाल सिंह के परिजनों तथा गाँव के अन्य लोगों ने भोजन किया।

सामाजिक समरसता के इस अनूठे उदाहरण से समाज में अच्छा संदेश गया है।

राष्ट्रगान के बाद ही मदरसों में होगी पढ़ाई की शुरुआत

उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद द्वारा बीती 24 मार्च को राज्य के मदरसों को लेकर कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं जो कि राज्य के सभी अनुदान प्राप्त और गैर अनुदानित मदरसों में नए सत्र (2022-23) से लागू होंगे। निर्णय के अनुसार कक्षा शुरु होने से पहले सभी शिक्षकों और छात्रों को राष्ट्रगान करना अनिवार्य होगा तथा अध्यापकों को बायोमेट्रिक उपस्थिति दर्ज करनी होगी।

सामाजिक समरसता की ओर बढ़ते कदम

किन्नर समाज कराएगा गरीब परिवार की बेटियों के विवाह

बीकानेर के किन्नर समाज ने गरीब परिवार की बेटियों के विवाह कराने का संकल्प लिया है। इसके लिए वे विवाह का सारा खर्चा करेंगे तथा बर्तन, कपड़े व अन्य आवश्यक सामान भी बेटियों को देकर विदा करेंगे।

22 अप्रैल को किन्नर समाज ने कुम्हार समाज की दो बेटियों का विवाह कराते हुए सारा खर्च अपनी ओर से किया। किन्नर मुस्कान बाई व अन्यों ने हाथदान की रस्म निभाई। उन्होंने कहा कि अपने गुरु रजनी बाई से ही सीखा है कि गरीब की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।

बता दें कि कोरोना काल में तथा अयोध्या में राममंदिर निर्माण के लिए किन्नर समाज ने दिल खोल कर लाखों रुपयों का दान दिया था।

विवाह एवं पुत्र-जन्मोत्सव पर बधाई देने व नाच-गान करने के बदले किन्नर रुपये प्राप्त करते रहे हैं। वे ही आज समाज के गरीबों की सहायता के लिए आगे आकर समाजिक समरसता की पहल कर रहे हैं। →

गरीब परिवार की बेटी के हाथदान की रस्म निभाती मुस्कान बाई

बाल प्रश्नोत्तरी-16 के परिणाम

1. तनिष्का शर्मा, पालड़ी मीणा, जयपुर
2. अपराजिता, सादुलशहर, श्रीगंगानगर
3. पीयूष सिंह गोहिल, भगवतगढ़, सवाईमाधोपुर
4. सुनीता कटारा, आबापुरा, बांसवाड़ा
5. मैनका मीणा, पीपल्दा, कोटा
6. तुषार माथुर, सी स्कीम, जयपुर
7. चिराग शर्मा, नदबई, भरतपुर
8. रितिका प्रजापत, बसवा, दौसा
9. मिनर्वा चौधरी, सादुलशहर, श्रीगंगानगर
10. ध्रुवराज, मालवाड़ा, जालोर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर
1.(क)
2.(ख)
3.(क)
4.(ख)
5.(क)
6.(ग)
7.(क)
8.(घ)
9.(ग)
10.(ख)

कश्मीर के श्रीनगर में रामनवमी पर शोभायात्रा

श्रीनगर में 10 अप्रैल को रामनवमी के अवसर पर निकाले गए जुलूस में राम, सीता लक्ष्मण और हनुमान के वेश में शामिल बालक-बालिकायें।

राममंदिर निर्माण सुगम बनाने के लिए गहलोत जी को धन्यवाद

राममंदिर ट्रस्ट के महामंत्री श्री चंपतराय ने 4 अप्रैल को मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को उनके निवास पर जाकर मंदिर निर्माण हेतु लगने वाले बंसी पहाड़पुर के पत्थरों में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए धन्यवाद दिया और मुख्यमंत्री को श्रीराम मंदिर का मॉडल भेंट किया।

उपनिषद्

● कुसुम शर्मा

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतं गमय ।।

(बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28)

हमारे वैदिक ऋषियों के द्वारा असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत यानि अमरता की ओर ले जाने वाली विद्या को ही उपनिषदों में बताया गया है।

वेदों के उस भाग को उपनिषद् कहा गया है जिसमें मन, बुद्धि, देह से हटकर आत्म–तत्व की चर्चा की गई है। कहीं यह चर्चा सीधे–सीधे आदेश रूप में, तो कहीं इसका वर्णन सुन्दर व सरल कथाओं के माध्यम से किया गया है। 'उपनिषद्' का सामान्य अर्थ श्रद्धा पूर्वक गुरु के समीप बैठकर अत्यंत भक्ति युक्त चित्त से उनके उपदेशों को हृदय में धारण करना है जो देह भाव से परे आत्मभाव से मानव मात्र को जोड़ता है। यह विद्या सांसारिक भाव से उत्पन्न अविद्या का नाश करने वाली है। शंकराचार्य जी ने इस ज्ञान को अविद्या का नाश करने वाला, दुखों से मुक्ति दिलाने वाला और ब्रह्मविद्या की प्राप्ति कराने वाला कहा है।

यद्यपि उपनिषदों की संख्या 108 के करीब मानी गई है फिर भी 10 उपनिषद् मुख्य रूप से व्यवहार में आते हैं। ये हैं– ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छांदोग्य, वेदारण्यक और श्वेताश्वर।

प्रत्येक उपनिषद् का किसी न किसी वेद से संबंध है। विषय के अनुसार 108 उपनिषद् छह भागों में विभाजित किए गए हैं। यथा वेदांत विषय से संबंधित 24 उपनिषद् हैं। सिद्धांत से संबंधित 20 उपनिषद्, सांख्य सिद्धांत से संबंधित 17 उपनिषद् और वैष्णव सिद्धांत से संबंधित 14 उपनिषद् हैं। शैव सिद्धांत से संबंधित 15 उपनिषद् हैं तो शाक्त सिद्धांत से संबंधित 18 उपनिषद् हैं।

उपनिषदों के महत्व को केवल भारतीय ही स्वीकार नहीं करते बल्कि पश्चिमी विद्वान भी स्वीकार करते हैं, क्योंकि यह तत्वज्ञान से जुड़े होने के कारण मानव मात्र के अंतःकरण में ज्ञान, प्रतिभा और समरसता का संचार करते हैं व मोक्ष की प्राप्ति कराते हैं।

17वीं शताब्दी में दारा शिकोह नाम के मुगल राजकुमार ने 50 उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद कराया। पश्चिमी विद्वान शोपेनहावर ने तो यहां तक कहा, '' उपनिषद् मेरे जीवन में शांति प्रदान करते हैं और मरने के उपरांत भी मुझे शांति प्रदान करेंगे।''

भारतीय ज्ञान, सत्य, चिंतन सभी का संग्रह उपनिषदों में मिलता है। इनका वर्ण्य विषय है ब्रह्म कौन है? ईश्वर कौन है? जीवात्मा का स्वरूप क्या है? जीवात्मा का लक्ष्य क्या है? किस प्रकार से भिन्नता में अभिन्नता को समझें? सृष्टि का मूल रूप क्या है? जगत का प्रादुर्भाव कैसे हुआ? जगत में प्रलय कैसे होती है ? आध्यात्मिक ज्ञान की आवश्यकता क्यों है? आध्यात्म से क्या–क्या साधा जाता है और आध्यात्मिकता के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति कैसे होती है? इस प्रकार के आध्यात्मिक विषयों का विवेचन उपनिषदों का विषय रहा है।

कठोपनिषद् में ब्रह्म प्राप्ति का सुंदर साधन बताया गया है। उसमें कहा है– इस शरीर में आत्मा रथी है, शरीर रथ है, बुद्धि सारथी है, मन रज्जु है और इंद्रियां अश्व हैं, संयमपूर्वक इंद्रियों के इन अश्वों को वश में करने पर जो रथी है वह स्वयं को यानी आत्मतत्व को आत्मसात कर लेता है।

ईशावास्योपनिषद् में कहा है कि इस संसार में श्रेष्ठ कर्मों को करते हुए सौ वर्ष तक जीवन जीने की इच्छा करनी चाहिए और उसमें कर्म करते हुए कर्म में लिप्त नहीं होना चाहिए। प्रकारांतर से देखें तो यह श्रीमद्भगवद्गीता के 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का ही संकेत देता है। ●

हमारे मंत्र -3

महामृत्युंजय मंत्र

ओऽम् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। (ऋग्वेद–6.30)

अर्थ– ओम स्वरूप तीन नेत्र धारण करने वाले भगवन् शिव! हम आपके निमित्त यह यजन (यज्ञ) करते रहे हैं। इसकी सुगंधि से हम निरन्तर पुष्टि (उत्तम स्वास्थ्य) को प्राप्त करें। आप हमें पके हुए खरबूजे के समान देह के बंधन से मुक्त करके मृत्यु से अमृत की ओर अर्थात् मोक्ष की ओर ले चलो।

विशेष– मंत्र में यह दृष्टव्य है कि यहां देह छोड़ने की तुलना केवल खरबूजे के फल से ही की गई है, जिसकी विशेषता है कि जब यह फल बेल में पूरी तरह पक जाता है तो स्वयं ही बेल को छोड़ देता है। यहां साधक की भावना है कि खरबूजे के समान ही मैं संपूर्ण जीवन को भली प्रकार जीता हुआ आसानी से देह को त्याग कर मोक्ष को प्राप्त करूं क्योंकि हमारे वाङ्मय में चार पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को मानव के जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

यह मंत्र ऋग्वेद में दिया गया है।

धर्मांतरित ईसाई और मुसलमान ले रहे हैं दोहरी सुविधाएं उन्हें एसटी सूची से हटाया जाए

भारत में हिंदुओं की अनुसूचित जातियों से मतांतरित (धर्मांतरित) होकर ईसाई और मुसलमान बनने वाले वर्तमान में दोहरी सुविधाएं ले रहे हैं। एक ओर तो वे एसटी के लिए किए गए आरक्षण व अन्य सुविधाओं का उपयोग कर रहे हैं तो दूसरी ओर वे अल्पसंख्यकों के लिए दी जाने वाली सुविधाएं एवं लाभ भी ले रहे हैं। इस ओर जनप्रतिनिधियों एवं जनता का ध्यान आकृष्ट करते हुए 'जनजाति सुरक्षा मंच' की केन्द्रीय टोली के सदस्य श्री मन्नालाल रावत ने कहा है कि ऐसे लोगों को एसटी की परिभाषा से बाहर किया जाना आवश्यक है।

संवैधानिक विसंगति

श्री रावत का कहना है कि 1950 में राष्ट्रपति द्वारा एससी एवं एसटी की सूचियां जारी की गई थीं। एससी की सूची में धर्मांतरित ईसाई एवं मुसलमानों को सम्मिलित नहीं किया गया था, जबकि एसटी की सूची में उक्त दोनों धर्मांतरित सूची से बाहर न रखकर सूची में ही रखे गए जो कि एक भारी विसंगति है तथा बहुसंख्यक एसटी के लिए उचित भी नहीं है।

सांसदों से संपर्क

'जनजाति सुरक्षा मंच' ने निश्चय किया है कि एसटी वर्ग से धर्मांतरित होकर ईसाई या मुसलमान बनने वाले लोगों को एसटी वर्ग की परिभाषा से निकलवा कर ही रहेंगे। इस हेतु उन्होंने अब तक 442 सांसदों से संपर्क कर संसद में कानून बनाने का आग्रह किया है। राजस्थान के भी 37 सांसदों से उनका संपर्क हो चुका है।

जनजाति सुरक्षा मंच

इस मंच का गठन 2006 में किया गया था। धर्मांतरित ईसाई एवं मुसलमानों को अनुसूचित जनजाति की सूची से हटाने के एक सूत्री लक्ष्य को लेकर मंच लगातार सक्रिय है। मंच का कहना है कि वर्तमान प्रावधान का लाभ उठाकर ईसाई मिशनरी एवं मुसलमान हिंदुओं के एसटी वर्ग को बहला-फुसलाकर तथा दोहरी सुविधाओं का लालच देकर मतांतरित करने में लगे हुए हैं, जो एसटी समाज के लिए घातक है।

अपनी मांग के समर्थन में मंच ने 2009 में महामहिम राष्ट्रपति महोदय को 28 लाख लोगों के हस्ताक्षरों से युक्त ज्ञापन भी दिया था। मंच ने राजस्थान के 5 हजार 500 जनजाति ग्रामों से संपर्क कर एसटी समुदाय को इस संबंध में जाग्रत करने का प्रयास किया है। इस हेतु 14 जिलों में जिला सम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं।

अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की पराकाष्ठा

मंत्री ने दिए उर्दू विषय को अनिवार्य रूप से पढ़ाने के निर्देश

राजस्थान में कांग्रेसी सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण के नित नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। अब यह सरकार छात्रों को भले ही, वह किसी धर्म या मातृभाषा का हो, उर्दू पढ़ाना अनिवार्य करने जा रही है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार राजस्थान की प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा राज्यमंत्री जाहिदा खान ने अपने हाल ही के भरतपुर प्रवास के दौरान शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिले के अल्पसंख्यक बाहुल्य क्षेत्र में उर्दू विषय को अनिवार्य विषय के रूप में तथा अन्य क्षेत्रों में वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाए। जाहिदा खान भरतपुर सर्किट हाउस में एक समीक्षा बैठक को संबोधित कर रही थीं।

जो छात्र उर्दू पढ़ना चाहता है उसे उर्दू पढ़ाने की व्यवस्था करना तो समझ में आता है परन्तु सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से उर्दू पढ़ाने का निर्देश मुस्लिम तुष्टीकरण की पराकाष्ठा है। कांग्रेस सरकार किस ओर अपना कदम बढ़ा रही है? कहीं ऐसी मंत्री कांग्रेस की नैया न डुबा दें।

महिला खिलाड़ियों की समस्याओं पर हुआ चिंतन

'वर्तमान में महिला खेलों में आ रही समस्याओं व सम्भावनाओं, दोनों को समझने की आवश्यकता है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही महिलाएं सभी क्षेत्रों में अग्रणी रहीं हैं।' उक्त उद्गार क्रीड़ा भारती के अ.भा.संगठन महामंत्री श्री प्रसाद महानकर के हैं जो उन्होंने बीती 11 अप्रैल को जयपुर स्थित सेवा सदन में आयोजित एक संगोष्ठी में व्यक्त किए।

'भारत में महिला खेल व खिलाड़ी-वर्तमान परिदृश्य' विषय पर आयोजित की गई यह गोष्ठी क्रीड़ा-भारती के स्थापना दिवस पर रखी गई थी।

संघ के क्षेत्र संघचालक डॉ.रमेश अग्रवाल का कहना था कि खेल आवश्यक है इसीलिए स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे कि गीता पढ़ने से पहले फुटबॉल खेलना आवश्यक है। खेलों के लिए सरकार के साथ-साथ सामाजिक प्रयास व खेल-नीति बनाना आवश्यक है। खेल परिषद् की पूर्व कोच सुश्री अमिता अधिकार ने महिला खिलाड़ियों की व्यथा बताते हुए कहा कि इसमें कोच की कमी व परिवार के सहयोग का अभाव एक बड़ी अड़चन है। इसके लिए सभी को आगे आकर सहयोग करना चाहिए। क्रीड़ा-भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल सैनी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रीय खिलाड़ियों का सम्मान किया गया।

उत्तर-स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी : 1. शाहपुरा 2. यतीन्द्र नाथ दास 3. मदन लाल धींगरा 4. होगला 5. बालमुकुंद बिस्सा 6. दुर्गा भाभी 7. 28 सितम्बर, 1926 8. खुदीराम बोस 9. मैडम भीकाजी कामा 10. 13 जनवरी,1785

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें –
सामान्य– 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
श्रेष्ठ– 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं।
उत्तम – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. क्रांतिकारी और कवि केसरी सिंह बारहठ का जन्म राजस्थान के किस स्थान पर हुआ था?
2. क्रांतिकारी साथियों के लिए 63 दिन का अनशन करने वाले राष्ट्रभक्त का नाम बताइए?
3. भारतीय छात्रों की जासूसी करने वाले कर्जन वायली को मौत के घाट उतारने वाले देशभक्त कौन थे?
4. मातंगिनी हाजरा का जन्म मिदनापुर (वर्तमान बांग्लादेश) जिले के किस ग्राम में हुआ था?
5. राजस्थान के 'जतिनदास' के नाम से विख्यात क्रांतिकारी कौन थे?
6. भगवतीचरण वोहरा की देशभक्त पत्नी क्रांतिकारियों में किस नाम से प्रसिद्ध थीं?
7. प्रसिद्ध क्रांतिकारी प्रमोद रंजन चौधरी को फांसी कब दी गई?
8. ब्रिटिश अधिकारी किंग्स फोर्ड को मारने की योजना में शामिल प्रफुल्लचंद चाकी के दूसरे साथी का नाम बताइए?
9. जर्मनी में आयोजित एक सम्मेलन में प्रथम बार भारतीय तिरंगा फहराने वाली महिला कौन थीं?
10. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले शहीद तिलका मांझी को भागलपुर (बिहार) में कब फाँसी दी गई?

उत्तर पृष्ठ 15 पर

आहार नली का कैंसर

– डॉ. हर्ष गोयल

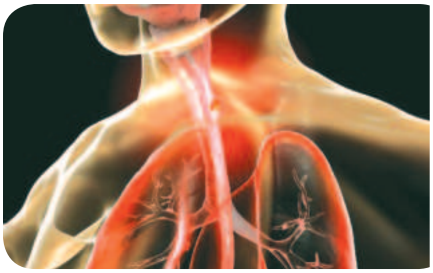

आहार नली हमारे शरीर का एक अंग है जो मुंह और पेट के बीच में होती है। यह हमारे भोजन को मुंह से पेट तक पहुंचाती है। इस नली के कैंसर को आहार नली का कैंसर बोला जाता है। भारत के करीब 200 लोगों में से एक व्यक्ति को आहार नली का कैंसर होने की संभावना रहती है।

कारण

- तंबाकू का सेवन इस कैंसर की संभावना को 5 गुना बढ़ा देता है तथा सुपारी, पान–मसाले का सेवन भी इस संभावना को बढ़ाता है।
- करीब 34 प्रतिशत कैंसर की संभावना अधिक शराब के सेवन से होती है।
- लंबे समय से एसिडिटी (गैस) की समस्या जैसे पेट के एसिड का मुंह में आना, गले या छाती में जलन का रहना भी एक मुख्य कारण है।
- अधिक गर्म पेय पदार्थ का अधिक मात्रा में सेवन आहार नली की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकता है। अधिक मात्रा में गर्म चाय, कॉफी या पानी का सेवन करने से इससे आहार नली का कैंसर होने की संभावना रहती है।
- मोटापा भी आहर नली के कैंसर होने की संभावना को बढ़ा देता है।
- महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में आहार नली का कैंसर की संभावना ज्यादा रहती है।

लक्षण

- खाना खाने में तकलीफ होना या निगलने में दर्द का होना।
- आवाज में भारीपन आ जाना।
- वजन का लगातार कम होते चले जाना।
- खांसी का चलना।
- सीने या गले में दर्द का या जलन का होना।

जांच

एंडोस्कोपी व बायोप्सी दूरबीन के माध्यम से आहार नली को देख लिया जाता है और खराब कोशिकाएं देखने पर या गांठ देखने पर उसकी जांच की जाती है जिसे बायोप्सी कहा जाता है। सीटी स्कैन और पेट स्कैन के माध्यम से आहार नली के कैंसर की स्टेज देखी जाती है।

बचाव

- तंबाकू का सेवन नहीं करें।
- अत्याधिक गर्म पेय पदार्थ का अधिक मात्रा में लगातार सेवन नहीं करें। जितना हो सके कम गर्म करके ही या थोडा ठंडा करके ही लें।
- खाना खाने में तकलीफ या निगलने में तकलीफ होने पर तुरंत ही अपने चिकित्सक से परामर्श लें।
- नियमित व्यायाम एवं योग करें और तनावमुक्त जीवन जिएं।

उपचार का प्रकार

- मुख्य रूप से तीन तरह से किया जाता है जिसमें की सर्जरी, कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी प्रमुख हैं।

(लेखक कोटा में कैंसर रोग विशेषज्ञ हैं)

हमारे सांस्कृतिक पर्व

वट सावित्री व्रत

वट सावित्री व्रत पति को दीर्घायु प्रदान कर सौभाग्य में वृद्धि करने वाला तथा संतान प्राप्ति में सहायता देने वाला माना जाता है। यह व्रत-पर्व प्रतिवर्ष ज्येष्ठ मास की अमावस्या तिथि को मनाया जाता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार इसी दिन सावित्री अपने पति सत्यवान के प्राणों को यमराज से छुड़ाकर वापस ले आई थीं। सावित्री अपने पति की मृत देह के साथ तीन दिनों तक वट वृक्ष के नीचे निराहार रहीं। वट वृक्ष के नीचे ही सत्यवान को फिर से नया जीवन मिला था। यही कारण है कि महिलाएं अपने पति की लम्बी आयु के लिए यह व्रत करती हैं और वट (बड़-बरगद) वृक्ष की विशेष पूजा करती हैं।

महिलाएं इस दिन वट का पूजन कर कथा सुनती हैं तथा वट वृक्ष की परिक्रमा करते हुए उसके चारों ओर सूत के धागे लपेटती हैं।

महाराष्ट्र, गुजरात और दक्षिण के राज्यों में यह व्रत ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को किया जाता है। वट वृक्ष को दीर्घायु व अमरत्व-बोध के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है। वट वृक्ष ज्ञान व निर्वाण का भी प्रतीक है। भगवान बुद्ध को इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था।

30 मई

हिन्दी पत्रकारिता दिवस

30 मई, 1826 को पंडित जुगल किशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ता (अब कोलकाता) स्थित कोलूटोला-आमड़तल्ला गली से हिन्दी के पहले समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। इसलिए इस दिन को हिन्दी पत्रकारिता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

31 मई

विश्व तम्बाकू निषेध-दिवस

विश्व भर में हर साल 31 मई को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य तम्बाकू सेवन के व्यापक प्रसार और नकारात्मक स्वास्थ्य प्रभावों की ओर ध्यान आकर्षित करना है। वर्ष 2021 की थीम थी-'कमिट टू क्विट' यानि 'छोड़ने के लिए प्रतिबद्ध'

कथन

" दुनिया शक्ति को मानती है। अपनी शक्ति है, होनी चाहिए। दिखनी चाहिए। जागरुक रहकर हम चलेंगे और चल ही रहे हैं। "

- डॉ. मोहन भागवत,
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
(कनखल, हरिद्वार 13 अप्रैल, 2022)

तथ्य

- भारत का 2021-22 में व्यापारिक वस्तुओं का निर्यात 417.8 अरब तक पहुँचा जो अब तक का सर्वाधिक है।
- केन्द्र सरकार ने 2014-15 से अब तक अल्पसंख्यक विद्यार्थियों के शैक्षिक सशक्तीकरण के लिए 14,643 करोड़ रुपए की छात्रवृत्ति प्रदान की।
- राजधानी जयपुर में 2016 से 2020 तक के आंकड़ों के अनुसार 1101 युवतियाँ लापता।
- दिल्ली से जयपुर के बीच बनेगा देश का पहला इलेक्ट्रिक हाईवे।

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत भाषा सीखने में बहुत सरल है। पाथेय कण के इस अंक से आप भी संस्कृत सीखना आरंभ करें -

- नमस्ते/नमस्कार
  नमस्ते/ नमस्कारः
- आपका नाम क्या है? (पुल्लिंग)
  भवतः नाम किम्?
- आपका नाम क्या है? (स्त्रीलिंग)
  भवत्याः नाम किम्?
- मेरा नाम .... है
  मम नाम ...... अस्ति

बाल प्रश्नोत्तरी -18

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 अप्रैल का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम उनकी फोटो सहित पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल-किशोर ही भाग ले सकते हैं।

उत्तर भेजने की अंतिम तिथि - 20 मई, 2022

1. **राजस्थान का एकीकरण कितने चरणों में हुआ था?**
   (क) तीन (ख) आठ (ग) सात (घ) पांच
2. **भारत ने दूसरा सफल परमाणु परीक्षण कब किया था?**
   (क)11 मई,1998(ख)11 मई,1999(ग)11मई,1990(घ) 11 मई,1992
3. **क्रांतिकारी वासुदेव चाफेकर को फांसी कब दी गई थी?**
   (क) 10 मई (ख) 8 मई (ग) 12 मई (घ) 15 मई
4. **पुणे के कमिश्नर चार्ल्स रैंड को यमलोक पहुँचाने वाले क्रांतिकारी कौन थे?**
   (क) विनायक (ख) महादेव (ग) बालकृष्ण (घ) दामोदर
6. **उदयपुर में प्रतिवर्ष बालासाहब देवरस व्याख्यानमाला किस संस्था की ओर से आयोजित की जाती है?**
   (क) सेवा भारती (ख) आरोग्य भारती (ग) उद्योग भारती (घ) संस्कार भारती
7. **'एक्यूपंक्चर' चिकित्सा पद्धति प्राचीन भारत में किस नाम से प्रचलित थी?**
   (क) मुठिका भेदन (ख) सुचिका भेदन (ग) हस्त भेदन (घ) मस्तक भेदन
5. **राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना किस वर्ष हुई थी?**
   (क) 1936 (ख) 1932 (ग) 1935 (घ) 1933
8. **सिंधु दर्शन तीर्थ यात्रा इस वर्ष कब से प्रारंभ हो रही है?**
   (क) 23 जून (ख) 20 जून (ग) 15 जून (घ) 25 जून
9. **क्रांतिकारी अल्लूरी सीताराम राजू पर डाक टिकट कब जारी किया गया?**
   (क) 1985 (ख) 1986 (ग) 1980 (घ) 1984
10. **विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस कब मनाया जाता है?**
    (क) 1 मई (ख) 5 मई (ग) 3 मई (घ) 10 मई

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वाट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -18)
(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी व्हाट्सएप करें)

उत्तर शीट - 1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( )
6.( ) 7.( ) 8.( ) 9. ( ) 10.( )

नाम ....पिता का नाम............................
उम्र ...... पूर्ण पता ....
....पिन.........................
मोबाइल नं. ....

बोधकथा

अपना-अपना दृष्टिकोण

गुरु द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर और दुर्योधन को बुलवाया। आचार्य बोले- 'युधिष्ठिर! तुम हस्तिनापुर जाओ और वहाँ से ऐसा व्यक्ति यहाँ लाकर उपस्थित करो जो सबसे अधिक दुष्ट हो, दुर्मति हो।'

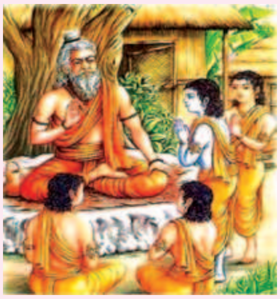

फिर आचार्य ने दुर्योधन से कहा- 'तुम भी हस्तिनापुर जाओ और एक ऐसा व्यक्ति साथ में ले कर आओ जो नगर में सबसे अधिक सज्जन हो, सदाचारी हो।'

युधिष्ठिर पूरे दिन नगर में भटकते फिरे, अनेक लोगों से बात की। आखिर में साँझ के समय सब प्रकार से निराश हो आश्रम में अकेले ही लौट आए। द्रोणाचार्य से निवेदन किया- 'गुरुदेव! मैंने बहुत खोजा, परन्तु मुझे तो सर्वत्र सज्जन और सदाचारी नागरिक ही देखने में आए। मैं उनसे बड़ा प्रभावित हुआ और उनसे मिल-भेंट कर बड़ी प्रसन्नता हुई। कहीं एक भी दुष्ट व्यक्ति दिखाई नहीं दिया मुझे।'

थोड़ी देर बाद हारा-थका दुर्योधन आश्रम में उपस्थित हुआ। दुर्योधन ने कहा- ' मैं सारा क्षेत्र घूमा बहुत लोगों से मिला। बातें की। वाद-विवाद और झगड़ा भी हुआ उनसे, लेकिन देखा कि एक से एक दुष्ट और दुर्मति मनुष्य वहाँ भरे पड़े हैं... मैं तो तंग आ गया उन लोगों से। बहुत खोज करने के बाद भी कहीं एक भी सज्जन मनुष्य मेरे देखने में नहीं आया।'

गुरुदेव ने कहा- 'ठीक है... जाओ, तुम दोनों नित्य कर्मों में लगो।' फिर अकेले में वे बुदबुदाए.. 'सच है कि जो जैसा होता है उसे हस्तिनापुर क्या संसार भर में वैसे ही लोग दिखाई देते हैं। इसका कारण है हमारा अपना दृष्टिकोण और निज का आचार-व्यवहार।'

पहचानो तो यह महापुरुष कौन है?

बाल मित्रों! यहाँ एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिए जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- आप लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना में शामिल थे।
- आपका जन्म शाहपुरा (भीलवाड़ा) के पास देवपुरा ग्राम में हुआ था।
- आप 24 मई, 1918 को 25 वर्ष की आयु में शहीद हो गए थे।

उत्तर: प्रताप सिंह बारहठ

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

24

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 मई, 2022
(25 अप्रैल को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

वैशाख पूर्णिमा से ज्येष्ठ शु. 1 तक, वि.सं.-2079
(16 से 31 मई, 2022)

जन्म दिवस

वैशाख पूर्णिमा (16 मई)	- भगवान बुद्ध जयंती
17 मई (1917)	- लामा कुशोक बकुला जयंती
ज्येष्ठ कृ.2(17 मई)	- देवर्षि नारद जयंती
22 मई (1772)	- राजा राममोहन राय जयंती
25 मई (1886)	- रास बिहारी बोस जयंती
ज्येष्ठ कृ 10 (25 मई)	- वीर आल्हा जयंती
ज्येष्ठ कृ.12 (27 मई)	- सम्राट पृथ्वीराज चौहान जयंती
ज्येष्ठ कृ.12 (27 मई)	- 14वें तीर्थंकर अनन्तनाथ जयंती
28 मई (1883)	- वीर सावरकर जयंती
ज्येष्ठ कृ.14 (29 मई)	- 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ जयंती
31 मई (1725)	- अहिल्या बाई होल्कर जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 मई (1665)	- मुरारबाजी देशपांडे की शहादत
17 मई (1933)	- अण्डमान में क्रांतिकारी महावीर सिंह की शहादत
24 मई (1918)	- प्रताप सिंह बारहठ की शहादत
26 मई (1934)	- चम्पक रमण पिल्लई की शहादत
29 मई (1939)	- हैदराबाद सत्याग्रह में नन्हू सिंह की शहादत

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

17 मई (1877)	- प्रथम सर्वेक्षक पं.नैनसिंह रावत सम्मानित
18 मई (1974)	- भारत ने प्रथम परमाणु परीक्षण किया
28 मई (1857)	- नसीराबाद छावनी से राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ
30 मई	- हिंदी पत्रकारिता दिवस
31 मई	- विश्व तम्बाकू निषेध दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

16 मई	- पीपल पूनम
27 मई	- वट सावित्री व्रत प्रारम्भ
29 मई	- बड़ पूजन अमावस्या

पंचांग- ज्येष्ठ (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(17 से 30 मई, 2022)

चतुर्थी व्रत -19 मई, **पंचक प्रारम्भ** -22 मई (प्रातः 11.12 बजे) **नौतपा प्रारम्भ** -25 मई, **अपरा एकादशी व्रत** -26 मई, **पंचक समाप्त** -26 मई (रात 12.30 बजे), **प्रदोष व्रत** -27 मई, **वट सावित्री व्रत प्रारम्भ (तीन दिन का)**-27 मई, **बड़ पूजन अमावस्या** -29 मई, **देवपितृकार्य व सोमवती अमावस्या** -30 मई

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 17-18 मई नीच की राशि **वृश्चिक** में, 19-20 मई **धनु** राशि में, 21-22 मई **मकर** राशि में, 23-24 मई **कुंभ** राशि में, 25-26 मई **मीन** राशि में, 27 से 29 मई **मेष** राशि में तथा 30 मई को उच्च की राशि **वृष** में गोचर करेंगे।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष में **गुरु** और **शनि** पूर्ववत मीन व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी क्रमशः मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** और व्रकी **बुध** भी यथावत वृष राशि में बने रहेंगे। **मंगल** 17 मई को प्रातः 9.32 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे तथा **शुक्र** 23 मई को रात 8.27 बजे मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे।

जन्मदिवस पर शत शत नमन

धर्म प्रचारक एवं लोक कल्याण हेतु प्रयत्नशील
देवर्षि नारद
ज्येष्ठ कृ. 2 (17 मई)

ब्रह्म समाज के संस्थापक
राजा राममोहन राय
22 मई

(1772-1833)

16 वें जैन तीर्थंकर
शांतिनाथ जी
ज्येष्ठ कृ. 14(29 मई)

वीर योद्धा एवं कुशल प्रशासक
अहिल्याबाई होल्कर
31 मई

(1725-1795)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
संपादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 मई, 2022 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में
____
____
____